बन्धनमुक्त आत्मा की निशानी

अभी अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर व्यक्त देह का आधार लेकर देख रहे हैं, यह अनुभव कर रहे हो? जैसे कोई स्थूल स्थान में प्रवेश करते हो वैसे ही इस स्थूल देह में प्रवेश कर यह कार्य कर रहे हैं। ऐसा अनुभव होता है? जब चाहें तब प्रवेश करें और जब चाहें तब फिर न्यारे हो जायें, ऐसा अनुभव करते हो? एक सेकेण्ड में धारण करें और एक सेकेण्ड में छोड़ें यह अभ्यास है? जैसे और स्थूल वस्तुओं को जब चाहो तब लो और जब चाहो तब छोड़ सकते हैं ना। वैसे इस देह के भान को जब चाहें तब छोड़ देही अभिमानी बन जायें – यह प्रैक्टिस इतनी सरल है, जितनी कोई स्थूल वस्तु की सहज होती है? रचयिता जब चाहे रचना का आधार ले जब चाहे तब रचना के आधार को छोड़ दे ऐसे रचयिता बने हो? जब चाहें तब न्यारे, जब चाहें तब प्यारे बन जायें। इतना बन्धनमुक्त बने हो? यह देह का भी बन्धन है। देह अपने बन्धन में बांधती है। अगर देह बन्धन से मुक्त हो तो यह देह बन्धन नहीं डालेगी। लेकिन कर्तव्य का आधार समझ आधार को जब चाहें तब ले सकते हैं ऐसी प्रैक्टिस चलती रहती है? देह के भान को छोड़ने अथवा उनसे न्यारा होने में कितना समय लगता है? एक सेकेण्ड लगता है? सदैव एक सेकेण्ड लगता है वा कभी कितना, कभी कितना। (कभी कैसी, कभी कैसी) इससे सिद्ध है कि अभी सर्व बन्धनों से मुक्त नहीं हुए हो। जितना बन्धनमुक्त उतना ही योगयुक्त होंगे और जितना योगयुक्त होगें उतना ही जीवनमुक्त में ऊंच पद की प्राप्ति होती है। अगर बन्धनमुक्त नहीं तो योगयुक्त भी नहीं। उसको मास्टर सर्वशक्तिमान कहेंगे? देह के सम्बन्ध और देह के पदार्थों से लगाव मिटाना सरल है लेकिन देह के भान से मुक्त होना मेहनत की बात है। अभी क्या बन्धन रह गया है? यही। देह के भान से मुक्त हो जाना। जब चाहें तब व्यक्त में आयें। ऐसी प्रैक्टिस अभी जोर शोर से करनी है। ऐसे ही समझें जैसे अब बाप आधार लेकर बोल रहे हैं वैसे ही हम भी देह का आधार लेकर कर्म कर रहे हैं। इस न्यारेपन की अवस्था प्रमाण ही प्यारा बनना है। जितना इस न्यारेपन की प्रैक्टिस में आगे होंगे उतना ही विश्व को प्यारे लगने में आगे होंगे। सर्व स्नेही बनने के लिए पहले न्यारा बनना है। सर्विस करते हुए, संकल्प करते हुए भी अपने को और दूसरों को भी महसूसता ऐसी आनी चाहिए कि यह न्यारा और अति प्यारा है। जितना जो स्वयं न्यारा होगा उतना औरों को बाप का प्यारा बना सकेंगे।

सर्विस की सफलता का स्वरूप क्या है? (भिन्न-भिन्न विचार सभी के निकले) सर्विस की सफलता का स्वरूप यही है कि सर्व आत्माओं को बाप के स्नेही और बाप के कर्तव्य में सहयोगी और पुरुषार्थ में उन आत्माओं को शक्तिरूप बनाना। यह है सर्विस की सफलता का स्वरूप। जिन आत्माओं की सर्विस करो उन आत्माओं में यह तीनों ही क्वालिफिकेशन प्रत्यक्ष रूप में देखने में आनी चाहिए। अगर तीनों में से कोई भी गुण की कमी है तो सर्विस की सफलता की भी कमी है। समझा।

मुख्य एक बात ध्यान में रखने और कर्म में धारण करने वाली कौन सी है, जिससे इस सफलता के स्वरूप को प्रैक्टिकल में ला सकते हो? वह कौन सी बात है? बहुत सहज है। मुश्किल बात को ध्यान देकर धारण करते हैं और सहज बात को छोड़ देने से सहज की धारणा देरी से होती है। यह मालूम है? समझा जाता है यह तो कोई बड़ी बात नहीं है। हो जायेगी। फिर होता क्या है? हो जायेगी, हो जायेगी करते-करते ध्यान से निकल जाती है। इसलिए धारणा रूप भी नहीं होते। तो वह कौन सी एक बात है? अगर उस बात को धारण कर लें तो सफलता स्वरूप बन सकते हैं। (साक्षीपन) हाँ यह बात ठीक है। आज बापदादा भी साक्षी अवस्था की राखी बांधने के लिए आये हैं। अगर यह साक्षीपन की राखी सदैव बंधी हुई हो तो सर्विस की सफलता बहुत जल्दी निकलेगी। अभी जिस कर्तव्य में मास लगता है उस कर्तव्य में एक घंटा भी नहीं लगेगा। यह साक्षीपन की राखी बांधनी है। औरों को तो प्युरिटी की राखी बांधते हो लेकिन बापदादा आज यह साक्षीपन की राखी बांध रहे हैं। जितना साक्षी रहेंगे उतना साक्षात्कारमूर्त और साक्षात् मूर्त बनेंगे। साक्षीपन कम होने के कारण साक्षात् और साक्षात्कारमूर्त भी कम बने हैं। इसलिए यह अभ्यास करो। कौन सा अभ्यास? अभी अभी आधार लिया, अभी अभी न्यारे हो गये। यह अभ्यास बढ़ाना अर्थात् सम्पूर्णता और समय को समीप लाना है। तो अब क्या प्रयत्न करना है? समय और सम्पूर्णता को समीप लाओ। और एक बात विशेष ध्यान में यह रखनी है कि अपने रिकार्ड को ठीक रखने के लिए सर्व को रिगार्ड दो। जितना जो सर्व को रिगार्ड देता है उतना ही अपना रिकार्ड ठीक रख सकता है। दूसरे का रिगार्ड रखना अपना रिकार्ड बनाना है। अगर रिगार्ड कम देते हैं तो अपने रिकार्ड में कमी करते हैं। इसलिए इस मुख्य बात की आवश्यकता है। समझा। जैसे यज्ञ के मददगार बनना ही मदद लेना है वैसे रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। देते हैं लेने के लिए। एक बार देना अनेक बार लेने के हकदार बन जाते हैं। जैसे कहते हैं छोटों को प्यार और बड़ों को रिगार्ड। लेकिन सभी को बड़ा समझ रिगार्ड देना यही सर्व के स्नेह को प्राप्त करने का साधन है। यह बात भी विशेष ध्यान देने योग्य है। हर बात में पहले आप। यह वृत्ति, दृष्टि और वाणी तथा कर्म में लानी चाहिए। जितना पहले आप कहेंगे उतना ही विश्व के बाप समान बन सकेंगे।

विश्व के बाप समान का अर्थ क्या है? एक तो विश्व के बाप समान बनना। दूसरा जब विश्व राजन बनेंगे तो भी विश्व का बाप ही कहलायेंगे ना। विश्व के राजन विश्व के बाप हैं ना। तो विश्व के बाप भी बनेंगे और विश्व के बाप के समान भी बनेंगे। किससे? पहले आप करने से। समझा।

निर्मान बनने से प्रत्यक्ष प्रमाण बन सकेंगे। निर्मान बनने से विश्व का निर्मान कर सकेंगे। समझा। ऐसी स्थिति को धारण करने के लिए साक्षीपन की राखी बांधनी है। जब पहले से ही साक्षीपन की राखी बांध के जायेंगे तो राखी की सर्विस सफलतापूर्वक होगी। समझा।

पार्टियों से - सम्मेलन कर रहे हो। सम्मेलन का अर्थ क्या है? सर्व आत्माओं का मिलन। सर्व आत्माओं का मिलन किससे करायेंगे? बाप से। आजकल समय कौन सा है? सम्पूर्णता का समय समीप आने का है तो वर्तमान समय के प्रमाण सफलता निश्चित हुई पड़ी है। जैसे

कल्प पहले भी पुरुषार्थ निमित्तमात्र कराया था। ऐसे भी नहीं कि पुरुषार्थ आज और प्राप्ति कब हो जायेगी। नहीं। अभी-अभी पुरुषार्थ अभी-अभी प्राप्ति। ऐसा पुरुषार्थ है? जब स्वयं प्राप्ति स्वरूप बनेंगे तब अन्य अनेक आत्माओं को प्राप्ति करा सकेंगे। अगर स्वयं प्राप्ति स्वरूप नहीं होंगे तो अन्य को कैसे प्राप्ति करा सकेंगे? अब नहीं करायेंगे तो कब करायेंगे। सुनाया था ना कि '' कब'' शब्द भी खत्म। हर बात में '' अब'' हो। इतना परिवर्तन वाणी, कर्म और संकल्प में लाना है। संकल्प में भी यह न आये कि कब कर लेंगे या कब हो जायेगा। नहीं। अब हो ही जायेगा। ऐसा परिवर्तन करना है तब सर्विस की सफलता है। अगर स्वयं में ही कब होगा तो आप की प्रजा भी कहेगी कि अच्छा तो बहुत लगा कब कर लेंगे या कब हो जायेगा। कब पर छोड़ने वाले पिछली प्रजा के होते हैं। तो अब नजदीक की प्रजा बनानी है। नजदीक की प्रजा बनाने के लिए नाजुकपना छोड़ना पड़ेगा। नाज़ों से चलना छोड़ राज़ों से चलना है। अलबेलापन नाजुकपन होता है। जितना- जितना राजयुक्त होंगे उतना उतना नाजुकपन छूटता जायेगा। रूहानियत का एक ही रूप सदैव रहता है? रूप बदलने के बजाए यह शरीर का भान छोड़ना है इस प्रैक्टिस में रहना है। शरीर छोड़ने का अभ्यास होगा तो रूप बदलना छूट जायेगा। पढ़ाई में भी रेगुलर होना मुख्य बात होती है। वह भी सिर्फ आने में नहीं लेकिन हर बात में रेगुलर, जितना रेगुलर उतना ही रूलर बनेंगे। तो क्या करना पड़े? सभी बातों में रेगुलर। अमृतबेले उठने से लेकर हर कर्म, हर संकल्प और हर वाणी में भी रेगुलर। एक भी बोल ऐसा न निकले जो व्यर्थ हो। इस दुनिया के जो बड़े आदमी हैं वह लोग जब स्पीच करते हैं तो उन्हों के बोलने के शब्द भी फिक्स किये जाते हैं। आप भी बड़े से बड़े आदमी हो ना। तो आपके बोल भी फिक्स होने चाहिए। माया के मिक्स न हो। ऐसे रेग्युलर बनने वालों की सर्विस सफल हुई पड़ी है। सम्मेलन का हर कार्य करते भी यह कभी नहीं भूलना कि हम विश्व के आगे साक्षात्कारमूर्त हैं। साक्षात्कार मूर्त बनने से आप के द्वारा बापदादा का साक्षात्कार स्वत: ही होगा। वह तब कर सकेंगे जब स्वयं को ज्ञान, योग का प्रत्यक्ष प्रमाण बनायेगे। जितना स्वयं को प्रत्यक्ष प्रमाण बनायेंगे उतना बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। अच्छा।

वरदान:- अपनी सूक्ष्म कमजोरियों को चिंतन करके परिवर्तन करने वाले स्वचिंतक भव

सिर्फ ज्ञान की प्वाइंटस रिपीट करना, सुनना वा सुनाना ही स्वचिंतन नहीं है लेकिन स्वचिंतन अर्थात् अपनी सूक्ष्म कमजोरियों को, अपनी छोटी-छोटी गलतियों को चिंतन करके मिटाना, परिवर्तन करना - यही है स्वचिंतक बनना। ज्ञान का मनन तो सभी बच्चे बहुत अच्छा करते हैं लेकिन ज्ञान को स्वयं के प्रति यूज़ कर धारणा स्वरूप बनना, स्वयं को परिवर्तन करना, इसकी ही मार्क्स फाइनल रिजल्ट में मिलती हैं।

स्लोगन:-

हर समय करन-करावनहार बाबा याद रहे तो
मैं पन का अभिमान नहीं आ सकता।

सूचना

आप सबको ज्ञात हो कि हम सबके अति स्नेही, बाबा के अनन्य महारथी रत्न महेन्द्र भाई जो लगभग 55 वर्षों से ज्ञान मार्ग में चल रहे थे। आपका लौकिक जन्म उत्तर प्रदेश के हापुड़ शहर में हुआ, वहाँ ही आपने शिक्षा प्राप्त करते ज्ञान लिया और ईश्वरीय सेवा में लग गये। विशेष साकार बाबा के सानिध्य में आपने अनेक प्रकार की सेवाओं में अपना योग दान दिया। पहले आगरा में रहकर सेवायें की फिर मध्य प्रदेश के भोपाल शहर में आप स्थानान्तरित होकर बेहद सेवायें करते रहे। उन्हें भिन्न-भिन्न स्थानों पर म्युजियम बनाने का विशेष बापदादा का वरदान था। आप राजयोग एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन के प्रसाशक प्रभाग के अध्यक्ष थे। वी.आई.पीज की सर्विस करने का बहुत अच्छा ढंग आता था। आपने ही सबसे पहले यू.पी. तथा मध्य प्रदेश के गवर्नर की सेवायें की, लखनऊ के गवर्नर हाउस में भी प्रदर्शनी आदि आयोजित करवाई। आबू तथा जयपुर में जो आध्यात्मिक संग्रहालय बने वह भी आपके ही निर्देशन एवं सहयोग से तैयार हुए। अनेक बी.के.टीचर्स बहिनों को ट्रेनिंग दी तथा कई सेवाकेन्द्र स्थापित किये। भोपाल शहर तथा मध्य प्रदेश में आपके निर्देशन में करीब 150 सेवाकेन्द्र चल रहे हैं। आपने एक हिन्दी पाक्षिक पत्रिका ''ज्ञान वीणा'' के द्वारा भी बेहद की सेवायें प्रदान की। बाबा उनको प्यार से किंग महेन्द्र कहकर सम्बोधित करते थे।

आपने कल 30 मार्च 2009 को दिन में एक बजे अचानक अपना पुराना शरीर छोड़कर बाबा की गोद ली। 31 मार्च दोपहर 12 बजे उनके पार्थिव शरीर को सजाकर भोपाल शहर में अन्तिम यात्रा के पश्चात् दोपहर 2 बजे अन्तिम संस्कार किया गया। ऐसी महान त्याग, तपस्या की उदाहरणमूर्त बाबा की अनन्य महारथी आत्मा के निमित्त अपनी श्रधांजलि अर्पित करने हेतु प्रातः 10 मिनट तथा सांय क्लास में 1 घण्टा याद तपस्या का कार्यक्रम रखा गया।